मसीही लोगों में सज़्मान (1 तीमुथियुस 5:1-6:2)

''इन बातों की भी आज्ञा दिया कर, ताकि [विधवाएं] निर्दोष रहें'' *(1 तीमुथियुस 5:7)।*

पौलुस जानता था कि विश्वास योग्य अगुआई के साथ (1 तीमुथियुस 3) प्रचारकों तथा परमेश्वर के वचन को सिखाने वालों द्वारा सुसमाचार के सच्ची लगन से किए गए प्रचार से (1 तीमुथियुस 4), कलीसिया में आत्माओं की उपज बढ़ेगी। बढ़ रही मण्डलियों के लिए अगली परीक्षा परमेश्वर के परिवार में एकता बनाए रखने और आवश्यकताओं को पूरा करने की होनी थी। यरूशलेम की कलीसिया के आरज़्भ होने पर ऐसा ही हुआ। प्रेरितों की योग्य अगुआई और समर्पित प्रचार के कारण, चेलों की गिनती बहुत बढ़ गई थी (प्रेरितों 2:41, 47; 5:14; 6:1)। परन्तु, मानवीय सज़्बन्धों में खटास आने लगी और बुड़बुड़ाहट होने लगी (प्रेरितों 2:46, 47; 6:1-5)। जिसका प्रभाव सुसमाचार के प्रचार पर भी पड़ा।

ऐसे नमूने की वास्तविकता और खतरे को समझकर यह आश्वस्त करने के लिए कि विश्वासी लोग एक दूसरे से सज़्बन्ध बनाए रखें, पौलुस ने 1 तीमुथियुस 5:1-6:2 में समझदारी की बातें बताईं। उसे पीढ़ी का अंतर (5:1, 2) और विधवाओं की विशेष ज़रूरतों (5:3-16) का ध्यान था। उसने तीमुथियुस से अपने आप को स्वस्थ रखने की बिनती करते हुए (5:23), सदस्यों और अध्यक्षों (प्राचीनों/ऐल्डरों) के बीच उचित सज़्बन्धों की बात कही (5:17-25)। फिर उसने दास-स्वामी जैसे सज़्बन्धों की सामाजिक समस्याओं के लिए मसीही सिद्धांत बताए (6:1, 2)।[1]

पौलुस ने मण्डलियों के अंदरूनी कार्यों का पूर्वानुमान लगा लिया जिनसे देह में सुसमाचार के प्रयासों में बाधा पड़ सकती थी। यदि विश्वासी लोग आज पौलुस की लिखी बातों पर ध्यान दें तो बहुत सी समस्याओं को दूर किया जा सकता है।

पाठ 14: हर युग के लिए सज़्मान (5:1, 2)

सज़्मान के लिए उसकी पुकार (आयतें 1, 2)

पौलुस ने यह कहते हुए कि, ''किसी बूढ़े को न डांट; पर उसे पिता जानकर समझा दे,

और जवानों को भाई जानकर; बूढ़ी स्त्रियों को माता जानकर। और जवान स्त्रियों को पूरी पवित्रता से बहिन जानकर, समझा दे'' (5:1, 2) परमेश्वर के परिवार में एक दूसरे के प्रति सम्मान रखने की मसीही लोगों से पुकार की। पौलुस द्वारा दिए गए सुझाव आज भी कुछ जगहों पर विशेष रूप से अनुकूल व उपयुकत हैं जहां जवानों पर अनावश्यक ज़ोर देने से बुज़ुर्गों के प्रति आदर कम हो जाता है।[2] ऐसा नहीं कि बुज़ुर्ग हर बात में सही ही हों, परन्तु उन्हें सम्मान देना आवश्यक है। पौलुस द्वारा दिए गए पवित्र आत्मा के निर्देश हर जगह और सब लोगों के लिए व्यावहारिक हैं।

लगता है कि पौलुस ने बुज़ुर्गों की गलतियों का पूर्वानुमान लगा लिया था। ज़्योंकि उसने आग्रह किया कि ''किसी बूढ़े को न डांट।[3]'' यदि बूढ़े भाई गलती न कर सकते हों, तो पौलुस उन्हें डांटने के विचार पर ध्यान न देता। परन्तु जवान व्यक्ति के लिए बूढ़े मसीही की बातों से किसी बूढ़े को डांटना या गलती करने पर भी ''पिटाई'' सही नहीं है। गलती करने वाले बुज़ुर्ग को डांटने के बजाय, पौलुस ने कहा कि ''पिता जानकर समझा[4] दे।''

यदि नौजवान बूढ़े लोगों को पिता के समान समझकर सम्मान देंगे, तो इससे परमेश्वर द्वारा दिया गया पारिवारिक सम्बन्ध समाज के लिए लाभदायक होगा।[5] यदि जवान लोग दूसरे जवानों को भाइयों की तरह समझें, तो उनसे मेल मिलाप की जबर्दस्त शक्ति मिलेगी।

जवान पुरुष (विशेषकर किसी जवान इवैंजलिस्ट) के जीवन में किसी स्त्री के साथ व्यवहार में ये सम्बन्ध इससे भी नाजुक होते हैं।[6]

> पाप के विषय में चेतावनी देने के व्यक्तिगत दायरे से मण्डली के महिला सदस्यों को निकाला नहीं जाना चाहिए। बेशक कभी – कभी यह कार्य संवेदनशील सिद्ध हो सकता है परन्तु इसे छोड़ना नहीं चाहिए। बल्कि तीमुथियुस को चाहिए कि बूढ़ी स्त्रियों को समझाते समय उनके साथ एक अच्छे और स्नेही वयस्क पुत्र की तरह गलती करने वाली अपनी मां के साथ व्यवहार करने की तरह पेश आए! अपनी मां की गलती को सुधारने के लिए निश्चित रूप से बड़ी दीनता, साफ़ मन, करुणा, अनुग्रह के सिंहासन पर लड़ने, बुद्धि की आवश्यकता होती है! गलती करने वाली किसी बूढ़ी स्त्री को समझाना अपना कर्ज़व्य समझने वाले तीमुथियुस का मन ऐसा ही होना चाहिए।

तीमुथियुस को दी गई सभी ताड़नाएं आज के जवान सुसमाचार प्रचारकों को ध्यान में रखनी चाहिए ताकि उनकी सेवा पर किसी प्रकार का दाग न लगे। विशेष तौर पर इसकी आवश्यकता किसी प्रचारक के युवतियों के साथ सम्बन्ध में आवश्यक है।

पवित्रता के लिए उसकी पुकार (आयत 2)

पौलुस ने आग्रह किया कि तीमुथियुस ''पूरी पवित्रता''[8] (5:2) से ये प्रयास करे। जवान इवैंजलिस्ट का काम ही (विशेषकर ''यूथ मिनिस्टरी'' के क्षेत्र में) ऐसी सोच की मांग

करता है जो एक मील और जाने को तैयार रहे और अपने आचरण, सेवा या नैतिक और सामाजिक जीवन में बदनामी से बचा रहे।[9]

एक और चेतावनी याद रखने वाली है कि किसी कमज़ोरी पर काबू पाने के लिए किसी दूसरे के साथ (किसी भी उम्र के) काम करना गलती सुधारने वाले को गलत ठहरा सकता है । गलतियों 6:1 कहता है, ''हे भाइयो, यदि कोई मनुष्य किसी अपराध में पकड़ा भी जाए, तो तुम जो आत्मिक हो, नम्रता के साथ ऐसे को सज्भालो और अपनी भी चौकसी रखो, कि तुम भी परीक्षा में न पड़ो।'' इसलिए पौलुस ने तीमुथियुस से पवित्रता से चलने अर्थात पाप रहित रहने का आग्रह किया।

पाठ 15: विधवाओं के लिए सज़्मान (5:3-16)

निश्चय ही कलीसिया में विधवाओं को ''आदर''[10] देना चाहिए (5:3)। कलीसिया के काम में विधवाओं की उपेक्षा होना बड़ी बात नहीं है। हम मान लेते हैं कि वे कोई सहायता नहीं कर सकती या हमें लगता है, ''हमें उनकी परवाह करने की ज़रूरत नहीं है।'' वास्तव में, अकेला होने के कारण उनमें सेवा करने की भावना अधिक हो सकती है और उनकी सेवा से बहुत लाभ हो सकता है।

विधवा की सहायता कौन करे? (आयतें 4, 16)

विधवाओं की सबसे पहले चिंता उनके निकट सज़्बन्धियों अर्थात बच्चों और नातीपोतों को होनी चाहिए (5:4)। बच्चों और नातीपोतों द्वारा किसी विधवा के प्रति दिखाया गया आदर व सज़्मान अपने स्वर्गीय पिता के रूप में परमेश्वर को मिलने वाले भयपूर्ण सज़्मान के समान है। विधवा सज़्बन्धियों की ओर ध्यान रखते हुए हमारा मन ''भज़्ति से भरा''[11] होना चाहिए।

सही *मन* वाला व्यज़्ति कुछ *खर्चा करेगा।* परमेश्वर को यह भाता है कि परिवार के लोग ''अपने माता पिता आदि को उनका हक[12] दें।'' इस हक़ में माता - पिता की सज़्भाल के लिए अपने कार्य और व्यवहार दोनों आते हैं। विलियम बार्कले ने तीन ढंग बताए हैं जिनसे हमें अपने माता - पिता को सज़्मान देना चाहिए:

> ... यह विचार करना कि जो कुछ मनुष्य के पास है वह उनका है जिन्होंने उसे जन्म दिया और उसे पाला पोसा, और उसे उनकी सेवा के लिए जो भी बन सके करना चाहिए, सबसे पहला और बड़ा और पुराना कर्ज़ चुकाना है; पहले तो, अपनी सज़्पज़ि में से; फिर, अपने आप में से; और तीसरा, उनकी सज़्भाल और परिश्रम के लिए जो उन्होंने उसके बचपन से लेकर उसके साथ किया, उनका कर्ज चुकाना चाहिए, और जो अब वह उन्हें लौटा सकता है जब कि वे बूढ़े हो गए हैं और उन्हें सज़्त ज़रूरत है।[13]

खर्च करने के बारे में इस सुझाव का बहुत महत्व है: ''यह परमेश्वर की नज़र में

स्वीकार्य है।'' कहने का तात्पर्य यह है कि इसके उलट बात परमेश्वर को स्वीकार नहीं है। पुराने और नये दोनों नियमों में परमेश्वर ने विधवाओं के लिए हमेशा विशेष प्रावधान रखे हैं।[14] किसी विधवा के साथ बाइबल में बताए गए ढंग के अनुसार व्यवहार करने के लिए उसकी सहायता और समर्थन और उसके प्रति चिंता आवश्यक है।

> हम एक ऐसे समय में रहते हैं जिसमें सबसे पवित्र दायित्व भी सरकार का फ़र्ज़ माना जाता है और जिसमें बहुत से मामलों में निजी तौर पर पवित्र लोगों को भागीदार होना चाहिए, हम सरकारी सेवा के कार्य से करने की उम्मीद करते हैं। ... माता - पिता को दी गई सहायता में दो बातें हैं। पहली तो यह कि इससे उनका सम्मान होता है। अपने मन में उनके प्रति आदर और श्रद्धा को संतान केवल इसी तरह दिखा सकती है। दूसरा, यह प्रेम के दावों को मानना है। यह प्रेम द्वारा प्रेम को दिया कर्ज़ है। यह आवश्यकता के समय मिले प्रेम को आवश्यकता के समय दिए जाने वाले प्रेम के साथ वापस करना है क्योंकि प्रेम का कर्ज़ केवल प्रेम से ही चुकाया जा सकता है।[15]

1 यूहन्ना 4:8 में हम पढ़ते हैं, ''जो प्रेम नहीं रखता, वह परमेश्वर को नहीं जानता, क्योंकि परमेश्वर प्रेम है।'' (19-21 आयतें भी देखिए)। सचमुच हमें वर्तमान सामाजिक मापदण्डों या समाज की उदासीनता के अनुसार नहीं बल्कि परमेश्वर के मापदण्ड के अनुसार चलने की आवश्यकता है!

पौलुस ने उनका उल्लेख किया जो ''सचमुच विधवाएं'' हैं। ऐसी महिलाएं अकेली हैं, क्योंकि उनके बच्चे भी उनके साथ नहीं। पारिवारिक तौर पर उनकी आवश्यकताओं को पूरा करने वाला कोई नहीं है। ऐसे मामलों में, उनकी सहायता करने के लिए कलीसिया को या उनकी सेवा की इच्छा करने वाले भाइयों को आगे आना चाहिए।

पौलुस ने विधवाओं की सम्भाल का एक और ढंग बताया - निजी तौर पर, विशेषकर किसी योग्य महिला द्वारा (5:16)। उनकी सहायता ऐसे की जा सकती है जिससे कलीसिया पर ''भार'' न पड़े। कलीसिया की यह तस्वीर अनावश्यक समस्याओं के कारण दबा दी जाती है क्योंकि कुछ लोग मांगते ही रहते हैं या अनावश्यक बिनतियां करते हैं। 2 थिस्सलुनीकियों 3:7-10 में पौलुस ने हमारी मसीही आत्मा के सम्बन्ध में यही सबक दिया है। आज हमारे समय में बिना काम किए ''कलीसिया पर निर्भर रहने'' की कोशिश करना दुख की बात है।

विधवा को क्या करना चाहिए? (आयत 5)

अपने हालात का सामना करने वाले बूढ़ों की सहायता के लिए पौलुस के शब्दों में महान शिक्षाएं मिलती हैं। विधवा का ''कोई नहीं''[16] होने पर, उसे ''परमेश्वर पर'' उम्मीद रखनी चाहिए (देखिए प्रेरितों 20:32; कुलुस्सियों 3:1-4; 1 पतरस 5:6, 7) और निवेदनों और प्रार्थनाओं से परमेश्वर द्वारा प्रदान की गई चीज़ों पर निर्भर रहना चाहिए (देखिए 2:1)। जब उसे अपनी किसी आवश्यकता का पता होता है, तो वह परमेश्वर के पास जाती है।

ऐसा वह ''रात दिन'' करती है। परिस्थितियों के कारण जब लोगों से उसका मिलना कम हो जाए तो परमेश्वर से उसका सम्पर्क बढ़ सकता है।

विधवा को ज़्या नहीं करना चाहिए? (आयतें 6, 7)

किसी विधवा को भोगविलास में पड़कर ''जीवन से वंचित होने'' के आवेगपूर्ण दबावों से बचना चाहिए[17] (5:6)। किसी विधवा के जीवन में इच्छा की ज्वाला को समझने के लिए अकेले रहकर, जीने के लिए संघर्ष करके और कम खाकर या किसी समय खाना छोड़कर अनुभव किया जा सकता है। केवल एक आनन्ददायक या विलासी क्षण को पाने की इच्छा (जैसे दूसरे लोग आनन्द करते हैं) नैतिक और आत्मिक बंधनों को तोड़ सकती है। बहकावे में आने या अकेलेपन की तड़प को कई तरह से संतुष्ट करने की इच्छा हो सकती है। पौलुस ने इन सब तरीकों को ''भोगविलास में पड़ गई'' के वाक्यांश में संक्षिप्त कर दिया। भजन संहिता 73:2-28 में ऐसी ही सोच का वर्णन किया गया है। आयत 17 में हमें विधवा को दिए गए पौलुस के सुझाव से मिलती जुलती बात मिलती है। उसने जीवन की परिस्थितियों का पूरी तरह से नये माप का सुझाव दिया और बड़ी समझदारी से एक मार्ग बना दिया जिससे पछतावा नहीं बल्कि संतुष्टि मिली।

पौलुस ने आश्वासन दिया कि अपने आप को भोगविलास में डालने वाली विधवा को दुख से छुटकारा या परीक्षाओं का अंत नहीं होगा क्योंकि भोगविलास में लिप्त रहकर अर्थात पापपूर्ण आनन्द से वह जीते जी ही मर जाएगी।

हर उम्र के और विधवाओं के लिए समझदारी की पौलुस की ये बातें वैकल्पिक नहीं बल्कि ''आज्ञाएं'' (ASV) हैं। पौलुस ने तीमुथियुस से इन बातों को भाइयों को सिखाने की ''सिफारिश'' की। आज्ञा मानने का अच्छा फल स्पष्ट दिखाई देता है क्योंकि आज्ञा मानने वाले सब लोग ''निर्दोष'' (यू.: *anepileptos;* 5:7) होंगे।

अनदेखी की चेतावनी (आयत 8)

फिर पौलुस ने अनदेखी करने की गंभीरता की चेतावनी दी: ''पर यदि कोई अपनों की और निज करके अपने घराने की चिंता न करे, तो वह विश्वास से मुकर गया है, और अविश्वासी से भी बुरा बन गया है'' (5:8)।

घर वालों की अनदेखी करने के परिणाम बहुत भयंकर हैं क्योंकि इससे समाज के क्षेत्रों में भी अनदेखी करने का रास्ता खुल जाता है। अपने घर की ही आवश्यकताओं (चाहे वे नैतिक, आत्मिक या भौतिक हों) पर विचार करने में असफल रहने का अर्थ अपने विश्वास का इन्कार करना है। मेरविन आर. विंसेंट कहता है कि ''विश्वास से मुकर गया'' वाक्यांश केवल यहां और प्रकाशितवाक्य 2:13 में ही मिलता है। उसने यह विचार भी जोड़ा: ''विश्वास कर्म और फल की मांग करता है। उन स्वाभाविक दायित्वों को पूरा करने से इन्कार करना जो मसीही विश्वास हमें सौंपता है, व्यावहारिक तौर पर अपने विश्वास का इन्कार करना है।' विश्वास स्वाभाविक दायित्वों को खत्म नहीं करता,

बल्कि उन्हें सिद्ध और पक्का करता है' (बैंगल)।''[18] विंसेंट ने याकूब 2:14-17 का हवाला दिया: ''हे मेरे भाइयो, यदि कोई कहे कि मुझे विश्वास है परन्तु कर्म न करता हो, तो उससे ज़्या लाभ ? ... वैसे ही विश्वास भी, यदि कर्म सहित न हो, तो अपने स्वभाव में मरा हुआ है'' (मरकुस 7:10-13 भी नोट करें)। बाइबल के अनुसार विश्वास वही है जो आज्ञा मानने से दिखाया जाए।

पौलुस ने ऐसे गिरे हुए आचरण की *अवस्था* का वर्णन किया कि अपने परिवार की उपेक्षा करने वाला व्यक्ति अविश्वासी से भी बुरा है, ज़्योंकि एक अविश्वासी यीशु मसीह के पीछे चलने का ढोंग किए बिना अपने परिवार की आवश्यकताओं का ध्यान रखता है। मसीही व्यक्ति के लिए उसके पदचिह्नों पर चलना आवश्यक है जिसने अपने आप को *सब* के लिए यहां तक कि अपने शत्रुओं के लिए भी दे दिया (2 कुरिन्थियों 5:14, 15; 1 पतरस 2:21-24)।

कलीसिया द्वारा विधवा की संभाल (आयतें 9, 10)

पौलुस ने ''सचमुच विधवा'' की पहचान बताई (5:3, 4, 16) ताकि कलीसिया को पता चल जाए कि उसे विधवा कब ''*लिखा* जाए''[19] (5:9)। पौलुस ने सिपाहियों में प्रचलित शब्द का इस्तेमाल किया, जिन्हें योग्य ठहरने पर देश का समर्थन मिलता था। विंसेंट के अवलोकन के अनुसार, लगता है कि पौलुस ने इस शब्द का इस्तेमाल विधवाओं के उस समूह के लिए किया जिन्हें कलीसिया का समर्थन मिलने वाला था।[20] कलीसिया में विधवाओं की सम्भाल करना सबसे पहली आवश्यकता थी (प्रेरितों 6:1-3)।

विधवाओं में बिल्कुल बूढ़ी स्त्री का नाम लिखा जाना चाहिए! विधवा के रूप में केवल उसी स्त्री का नाम लिखा जाए जो जीवन भर अपने पति के प्रति वफ़ादार रही हो; लेकिन अब अकेली है और उसकी उम्र इतनी हो गई है कि अब वह अपनी सम्भाल नहीं कर सकती (5:9) है। सबसे बढ़कर जिस विधवा की कलीसिया की ओर से सहायता होनी है उसका पिछला जीवन सेवा करने का हो जिससे उसकी महिमा बढ़ जाए (5:10)।[21]

उसने घर में काम करते हुए बच्चों का पालन - पोषण किया हो। समाज की सेवा करते हुए ''अनजाने लोगों की पहुनाई'' की हो (इब्रानियों 13:2; 1 पतरस 4:9)। ''पवित्र लोगों के पांव धोए'' हों (अर्थात भला कार्य किया हो न कि यूहन्ना 13:3-15 के अनुसार कलीसिया की रीति), दीनता से सेवा की हो। उसने सहानुभूति से सेवा करते हुए दुखी लोगों को राहत दी हो (मत्ती 25:36)। सचमुच, उसका सम्मान भले काम करने वाली स्त्री के रूप में हो। ''उसने हर एक भले काम में मन लगाया[22] हो।'' ऐसी बहन कलीसिया में कहीं भी सेवा करे, अपना अच्छा प्रभाव ही छोड़ेगी।

जवान विधवा जो लड़खड़ाकर गिर जाती है (आयतें 11-13)

जवान विधवाओं को पाप में पड़ने से बचने की पौलुस की बिनती में मनुष्य की निर्बलता में झांकने की पवित्र आत्मा की समझ स्पष्ट दिखाई देती है। उसने विधवाओं को मसीह और सामान्य समझ को छोड़ने के लिए नहीं कहा।

जवानी में मसीह में किसी बहन के जीवन साथी के अचानक छिन जाने से उसकी प्रतिक्रिया इस प्रकार हो सकती है। उसका जीवन साथी छिन गया है और ''सहायक'' की आवश्यकता पड़ने पर उसे बड़ी कठिनाई आती है।

1. उसकी इस हानि से मसीह के प्रति संदेह या निराशा हो सकती है।

2. वह किसी पुरुष की संगति की आशा कर सकती है।

3. अपने लड़खड़ाने वाले विचारों के कारण डर सकती है या वह अपने आप को दोषी मान सकती है (जिससे वह परमेश्वर से छुपने लगे - उत्पत्ति 3:8)।

4. मानसिक और शारीरिक थकावट से, वह आलसी बन सकती है।

5. भाइयों द्वारा (उसके दुख के कारण) यह सोचकर कि ''हम उसे अकेले छोड़ दें'' वह अपने आप को अकेला महसूस कर सकती है। यह सोचकर कि उस पर बोझ न डाला जाए कलीसिया उसे ज़िम्मेदारियां देने की अनदेखी करके उसे प्रभु की सेवा से वंचित कर सकती है।

परमेश्वर की प्रेरणा से पौलुस ने हमें इन वास्तविक खतरों से सावधान किया। हमें मसीह में अच्छी बहनों को सिखाना चाहिए कि वे दुख की घड़ी में पाप में फंसने से बचें। पौलुस ने उन छह छोटी - छोटी गलतियों की ओर ध्यान दिलाया जो एक जवान विधवा कर सकती है:

1. वह ''सुख विलास में''[23] पड़कर प्रभु को छोड़ सकती है (5:11)। मसीही स्त्री को *शैतानी इच्छाएं* अपने मन में नहीं आने देनी चाहिए!

2. इन विधवाओं ने ''अपने पहले विश्वास[24] को छोड़ दिया''[25] (5:12)। जवान विधवा अपनी ईश्वरीय स्थिति को ''नकार'' (ASV) सकती है। निराशा में, वह यह तर्क दे सकती है कि उसके जीवन साथी को इतनी बेदर्दी से छीन लिया गया, इसलिए मसीह के साथ वाचा तोड़कर उसने कोई गलती नहीं की। परमेश्वर की सामर्थ और भलाई में उसके भरोसे की परीक्षा है! इसमें *परमेश्वर का इन्कार* मिलता है।

3. वह ''आलसी'' (5:13) हो जाती है। वह *उन मांगों को टालने* लगती है जिनसे उसे मसीह में वापस आने में सहायता मिल सकती है।

4. वह घर - घर ''फिरने'' लगती है।[26] अकेला रहने के लिए वह इधर - उधर घूमने और चज़्कर काटने शुरू कर सकती है; परन्तु एक न एक दिन वह अपने आप को गलत स्थान पर ले जाती है! वह *दिशाहीन कामों* या उद्देश्यहीन घूमने में लगी रहती है।

5. वह ''बक - बक''[27] करने वालों में मिल जाती है। दूसरों की बदनामी को एक दूसरे से बढ़कर विरोध करने से उकसाया जा सकता है: ''जो मैं कर रहा हूं वह तुझे अच्छा नहीं लगता, इसलिए जो तू करने वाला है मैं उसमें कोई गलती निकाल ही लूंगा।'' यह उसके दुख का इन्कार करने का प्रसन्नचिज़ मुखौटा भी हो सकता है। वह अपने पश्चाज़ाप की वास्तविकता से बचने के लिए तुच्छ बातें करने में लग जाती है। आज या कल उसकी यह *खतरनाक घोषणाएं* उसे और/या दूसरों को आघात पहुंचाएंगी।

6. वह *अपमानजनक खुदाई* में ''अनुचित बातें''[28] करने वालों के साथ मिल जाती है! वह और उसके गप्पें मारने वाले साथी लज्जाजनक अफ़वाहें ''फैलाने'' की कोशिश करते हैं।

ऐसे हानिकर, खतरनाक ढंग से काम करते हुए मसीह में ऐसी किसी बहन की सहायता करना दुख की बात है। *किसी भी जवान विधवा और भाइयों को पौलुस की चेतावनी के शब्द याद रखने चाहिए ताकि पहले से दुखी कोई बहन बहकावे में न आ जाए।*

एक जवान विधवा के लिए विकल्प (आयतें 14, 15)

किसी भी परिस्थिति में परमेश्वर अपने बच्चों को अच्छी दिशा देने में समर्थ है। जवान विधवा को शैतान को देने की अनुमति देने के बजाय पौलुस ने उसे कुछ व्यावहारिक विकल्प दिए।

जवान विधवा फिर से विवाह करके साथी पाने की स्वाभाविक इच्छा कर सकती है (5:14)। आयत 11 में मसीह की अवहेलना करके विवाह का खतरनाक और मूर्खतापूर्ण ढंग मिलता है। पौलुस ने यहां पर जवान विधवा को आश्वासन दिया कि उसकी चेतावनी उसके विवाह करने के अधिकार का इन्कार नहीं (रोमियों 7:2, 3) बल्कि आयत 11 में दी गई विवाह के लिए उसकी प्रेरणा को बदलने के लिए थी।

वह ''बच्चे जने,'' ताकि उसके प्रिय के जाने से उसके जीवन और उसके मन में इस संसार में जीवन को लाने या फिर से पारिवारिक स्थिति में प्रेम बांटने का भय न हो।

मसीह के लिए उसकी सेवा बरकरार रह सकती है यदि वह ''घर बार सज़्भालने'' की पौलुस की सलाह को मान ले। उसे घर बार सज़्भालने के लिए कहा गया है। यह पौलुस की उस बात का विरोध नहीं है जिसमें उसने कहा कि पत्नी का सिर पति है (इफिसियों 5:23, 24) न ही सारा अधिकार होने का विरोध मसीह का दावा (मज़ी 28:18) पौलुस की टिप्पणी से किसी प्रकार का टकराव है कि मसीह परमेश्वर के अधीन है (1 कुरिन्थियों 15:23-28)। जैसे पौलुस ने 1 कुरिन्थियों 11:3 में कहा है कि पत्नी का अधिकार पति के ऊपर नहीं है, बल्कि उसका कार्य सुव्यवस्थित ढंग से घर को चलाने के लिए उसके साथ काम करना है। बच्चों को सिखाना और घर का प्रबन्ध करना अकेले पिता का काम नहीं है।

घर में स्त्री की अगुआई का अच्छा लक्ष्य यह है कि विरोधी अर्थात शैतान और उसके सहायकों को अवसर न दिया जाए। विधवा को ऐसा काम करना जिससे किसी शत्रु को उसकी ''निंदा''[29] करने का अवसर न मिले। (नोट तीतुस 2:8; 1 पतरस 2:11, 12; 3:15-17.)

यदि अध्याय 5 में दिए गए पौलुस के सिद्धांतों को मान लिया जाए, तो कोई बच्चा या नाती - पोता अपने माता - पिता या बुज़ुर्गों को कलीसिया के सहारे नहीं छोड़ेगा। इस नीति से दुख बंट जाएगा। यदि सभी लोग पौलुस के सिद्धांतों को मान लें, तो कलीसिया को सचमुच में विधवाओं को राहत देने की छूट होगी और ज़रूरतमंदों के प्रति अपने कर्ज़व्य का पालन करने से कतराने का ख़तरा नहीं उठाना पड़ेगा (देखिए 2 कुरिन्थियों 8:13-15; गलतियों 6:2-5)।

पाठ 16: ऐल्डरों या प्राचीनों के लिए विशेष सम्मान (5:17-25)

पौलुस ने कलीसिया में शानदार सेवा करने वाले भाइयों के लिए बहुत अच्छे सुझाव दिए हैं। ऐल्डरों (अर्थात प्राचीनों) या अध्यक्षों को भी अक्सर इस उम्र में नज़रअंदाज किया जाता है, और जैसा कि पौलुस ने यहां बताया कि बहुत से ऐल्डर भी सेवा करना छोड़ गए हैं। परमेश्वर की प्रेरणा से दिए गए पौलुस के निर्देशों के आधार पर हमें आत्मा के ईश्वरीय निर्देशों के साथ मिलाने के लिए इन बातों में सुधार करना चाहिए।

की जाने वाली आत्मिक सेवा (आयत 17)

पौलुस ने यह कहते हुए आरम्भ किया, ''जो प्राचीन अच्छा प्रबन्ध करते हैं, विशेष करके वे जो वचन सुनाने और सिखाने में परिश्रम करते हैं, दो गुणे आदर के योग्य समझे जाएं'' (5:17)। सफल ऐल्डर वही है जो अच्छा ''प्रबंध करता''[30] है। कलीसिया में तानाशाह, अहंकारी ऐल्डर, या आडम्बरी पास्टर जो अपने प्रियपात्रों के वोटों से ''शासन'' करता है, के लिए कोई जगह नहीं है। किसी अच्छे काम को रोकने की उसे ''वीटो पावर'' नहीं दी गई है। प्रबन्ध करने के ऐल्डर के अधिकार के लिए ज़रूरी है कि वह पूरे ध्यान से उन लोगों की सहायता करे जिनकी वह सम्भाल करता है। हमारे प्राणों के प्रधान चरवाहे की तरह (1 पतरस 2:25; 5:4; मत्ती 20:26-28), ऐल्डर उसके अधिकार में रह रहे लोगों के प्रति चिंता के साथ सेवा करके उन पर शासन करता है। पौलुस ने ऐल्डर के प्रबन्ध करने के कई ढंग बताए हैं:

(1) वह ''अच्छा'' प्रबन्ध करता है। सेवा की भावना वाले व्यक्ति के लिए यह कितना बढ़िया शब्द है! ''अच्छा'' का अर्थ उत्तमता, धार्मिकता और ईमानदारी से है। इसमें योग्य, निष्कलंक सेवा का सुझाव है। इनमें से कौन सा गुण है जिसके बिना कोई ऐल्डर काम कर सकता है?

(2) वह ''परिश्रम करता'' है।[31] वह मण्डली कितनी भाग्यवान है जिसमें सेवा करने वाले ऐसे ऐल्डर हों!

(3) वह ''वचन सुनाने में'' परिश्रम करता है।[32] एक ऐल्डर के रूप में काम करते हुए वह थककर चूर हो जाता है। क्योंकि यहां मूल अनुवाद का अर्थ ''वचन में'' है, इसलिए लगता है कि इसका अर्थ किसी की बोल चाल है। परन्तु प्रेरितों 20:2 में ''उन्हें बहुत समझाकर'' जैसे वाक्यांश का अनुवाद ''उन्हें वचन से समझाकर ...'' भी हो सकता है। यदि बाद वाला विचार सही है, तो यह ऐल्डर वचन में परिश्रम (अध्ययन कराकर) थक कर चूर हो गया। यदि यह पहला विचार है (इस करण, वचन में हो या बोलचाल में), तो वह भाइयों के पास नियन्त्रित और समझाने वाली बातें बताते हुए थककर चूर हो गया। दोनों में से किसी भी विचार के अनुसार एक ऐल्डर के लिए वचन का सतर्क छात्र होना आवश्यक है (1 पतरस 4:11)।

(4) वह ''सिखाने में'' परिश्रम करते हुए थक जाता है और सच्चाई से जरूरतमंद लोगों को बताते हुए और चुनौती देते हुए थककर चूर हो जाता है। ऐसी सेवा केवल ''अच्छा

जीवन जी कर'' ही नहीं पाई जा सकती। हमें ऐसे ऐल्डरों की आवश्यकता है जो पवित्र शास्त्र से तर हों और निजी तौर पर या सार्वजनिक तौर पर दूसरों के साथ वचन की सांझ करने के प्रभावी काम में अपने आप को थका देते हों। ''वचन सुनाने और सिखाने में'' परिश्रम करना इफिसियों के ऐल्डरों के बीच में पौलुस के आचरण जैसा ही है। बाद में उसने उन्हें एक उदाहरण देते हुए कि ऐल्डरों के रूप में उन्हें कैसे सेवा करनी चाहिए कहा, ''जो जो बातें तुम्हारे लाभ की थीं, उनको बताने और लोगों के सामने घर-घर सिखाने से कभी न झिझका'' (प्रेरितों 20:20, 35)।

भाइयों के लिए समर्थन देने का मन होना (आयतें 17-22)

पौलुस द्वारा बताया काम करने वाले ऐल्डर निश्चय ही ''दो गुने आदर[33] के योग्य[34]'' (5:17) हैं। ऐल्डरों के ''दोगुने आदर'' पाने के अलग-अलग अर्थ दिए जाते हैं। इस वाक्यांश का अर्थ नीचे दिए गए शब्दों में से कोई भी हो सकता है:[35]

1. दोहरा वेतन
2. सम्मान और वेतन
3. साठ साल की विधवाओं से दोगुना वेतन
4. डीकनों से दोगुना वेतन
5. एक बुज़ुर्ग के रूप में सम्मान और एक ऐल्डर के रूप में सम्मान
6. एक भाई के रूप में सम्मान और एक ऐल्डर के रूप में सम्मान
7. उसकी स्थिति और काम के कारण विशेष सम्मान जिसमें उसका वेतन भी शामिल हो

इस सूची में 2 और 7 नम्बर को इसी संदर्भ से समझना चाहिए। ये भाई ''योग्य'' हैं।

जब कोई ऐल्डर ''परिश्रम करता है'' (आयतें 17, 18)

मसीह के अधीन और मसीह के द्वारा कलीसिया के लिए ईश्वरीय उद्देश्य को बहाल करने के हमारे प्रयास में हमारी दो जरूरतें हैं: (1) हमें चाहिए कि पर्याप्त, विशेष शिक्षा दें ताकि लोग ''वचन के सुनाने और सिखाने में परिश्रम'' करने के योग्य हो जाएं। (2) जब किसी को इस महान काम के लिए तैयार किया गया हो (सामान्यत: रिटायर होकर झुंड के साथ काम करने वाले ट्रेंड इवेंजलिस्ट) तो हमें उसे सहायता की पेशकश करनी चाहिए ताकि उन्हें सेवा करने का समय और साधन दोनों मिल सकें।

ऐल्डरों की सहायता के बारे में भी नये नियम में हमें उतना ही निर्देश मिलता है जितना सुसमाचार प्रचारकों की सहायता के लिए (देखिए 1 कुरिन्थियों 9:13, 14; गलतियों 6:6; 1 तीमुथियुस 3:3; तीतुस 1:7; 1 पतरस 5:2)।

5:7, 18 का संदर्भ यह प्रमाण देता है कि ऐल्डरों की ''जो वचन के सुनाने और सिखाने में परिश्रम करते हैं'' सहायता की जानी चाहिए:

1. व्याकरणीय संरचना इसकी मांग करती है। वाज़्यांश ''योग्य समझे जाएं'' है। जिसका अर्थ यह है कि हमें प्रार्थना करनी चाहिए कि ऐल्डरों को ''दोगुना आदर'' मिलने और इसके लिए काम भी करना चाहिए।

2. पौलुस ने पुराने नियम का हवाला दिया, ''ज़्योंकि पवित्र शास्त्र कहता है, कि दांवने वाले बैल का मुंह न बांधना'' (5:18; देखिए व्यवस्थाविवरण 25:4)। 1 कुरिन्थियों 9:9-14 में उसने इसी उदाहरण का इस्तेमाल यह सिद्ध करने के लिए किया कि वचन का प्रचार करने वाले की सहायता करना उचित है।

3. पौलुस ने यह भी जोड़ा, ''ज़्योंकि मजदूर अपनी मजदूरी का हकदार है'' (5:18)। यहां मजदूरी का अभिप्राय प्रचारक को मिलने वाले वेतन से है। पौलुस के कहने का अर्थ था कि किसी मजदूर को वेतन देना पवित्र शास्त्र के अनुसार है। अब हमें पता है, ज़्योंकि पौलुस ने लिख दिया! परन्तु यीशु ने लूका 10:7 में यही बात कही थी। पुराने नियम के सिद्धांत में यह सिखाया गया था कि पौलुस ने इसकी शिक्षा दी और यीशु ने भी सिखाया।

किसी ऐल्डर द्वारा पाप करने पर (आयतें 19, 20)

भाइयों में पाए जाने वाले पाप के प्रति जिस समझ की हमें आवश्यकता है उसमें पाई जाने वाली बातों पर ध्यान दें।

पहले तो, हम आरोप लगाने या आरोप सुनने को व्याकुल न हों (5:19)। ''मसालेदार ख़बरें'' या किसी दूसरे व्यक्ति के बारे में ताज़ा आलोचनात्मक टिप्पणी सुनने के शौकीन व्यक्ति के दिमाग़ में कुछ मनोवैज्ञानिक गड़बड़ी है। हमें चाहिए कि बाइबल में बताए गए और सहजबुद्धि के ढंग अपनाएं। हमें चाहिए कि किसी आरोप को बिना गवाही के न मानें। इससे कहानी के खिंचने से बचाव हो सकता है। किसी भावनात्मक क्षण में कोई बात या शब्द कहानी को और निष्कर्ष को बदल सकता है जिससे यह निर्णय लिया जा सकता है कि वह काम सही था या गलत। गवाहों की मांग करने से छोटे - छोटे महत्वहीन विचारों पर चर्चा करने से बचा जा सकता है (देखिए 5:21)। इससे किसी ऐल्डर या प्राचीन के विरुद्ध अफवाह फैलने से भी रोकी जा सकती है।

दूसरा, हमें यह सुनिश्चित करना चाहिए कि पाप को नज़रअंदाज न किया जाए (5:20)। पौलुस ने उनके बारे में लिखा जो ''पाप में लगे रहते'' हैं। *वर्तमान,* कर्तृ वाचक में उसके शब्दों से संकेत मिलता है कि पाप उसी समय में हुआ या वर्तमान में पाप हो रहा है।[36] यह हाल ही के उस पाप की जिसमें सुधार नहीं किया गया या किसी के पाप करते रहने की बात होगी। पाप को नज़रअंदाज करने के बजाय, हमें पापी को ''समझाना''[37] चाहिए। ध्यान दें कि यह कोई व्यक्तिगत द्वेष नहीं है, बल्कि एक ऐसा मामला है जिसमें कोई विशेष पाप का पता चला है (देखिए मत्ती 18:15)। उससे बात करने के समय बाइबल में से बताया जा सकता है ज़्योंकि किसी गलती को बताने के लिए परमेश्वर का वचन ही मापदण्ड हो सकता है। ऐसी बातचीत में व्यक्ति विचार और ''मुझे लगता है'' वाली बात नहीं होनी चाहिए।

तीसरी बात, हमें यह यकीनी बनाना चाहिए कि पाप के प्रति कार्यवाही से सज़ी ''पाप करने से डर जाएं।'' प्रेरितों 5:1-11 में कलीसिया में हनन्याह और सफीरा के पाप का दण्ड मिलने से ''सारी कलीसिया पर और इन बातों के सब सुनने वालों पर बड़ा भय छा गया'' था।

जब किसी ऐल्डर का चयन होता है (आयतें 21, 22)

पौलुस के इन सिद्धांतों की बात करते हुए, हम भयदायक श्रोताओं के रूप में परमेश्वर, मसीह और चुने हुए स्वर्गदूतों के सामने काम कर रहे हैं। पौलुस ने ऐल्डरों के चयन और नियुज़्ति में शामिल होने वाले लोगों के गुण बताए हैं।

1. वह निष्कपट होना चाहिए: ''मन खोलकर इन बातों को माना कर'' [38] (5:21)। इसमें ''मैं कल्पना कर सकता हूं'' या ''ऐसा हो सकता है'' के लिए कोई जगह नहीं है। जल्दी में बिना आधार के निर्णयों से इन निष्कर्षों के प्रति निष्कपटता व प्रेम को छोड़ कुछ भी किया जा सकता है।

2. उसका पक्षपात रहित होना आवश्यक है: ''कोई काम पक्षपात से न कर।'' सुसमाचार प्रचारक पर किसी बात में किसी का ''पक्ष'' लेने का दबाव पड़ सकता है। घनिष्ट मित्र इच्छा कर सकते हैं कि पापी को धर्मी ठहराया जाए, जबकि अन्य भाई उसमें शामिल ज़ाई का अपमान करने का अवसर ढूंढ़ रहे हो सकते हैं। लेकिन सबसे सुरक्षित ढंग पूरी तरह से निष्पक्ष होकर *सच्ची बात कहते हुए अगुआई करना ही होगा।*

3. उसे जल्दबाज नहीं होना चाहिए: ''किसी पर शीघ्र हाथ न रखना'' (5:22)। ऐल्डरों का चुनाव सदस्य ही करते हैं (देखिए प्रेरितों 6:1-6), परन्तु नये नियम के समयों में उनकी नियुज़्ति (या अलग से ठहराने का काम) प्रेरितों या इवैंजलिस्टों ने ही की। इसमें उन्होंने उन पर हाथ रखे होंगे (देखिए प्रेरितों 13:1-3; 1 तीमुथियुस 4:14)।[39] तीतुस 1:5 में एक सुसमाचार प्रचारक अर्थात इवैंजलिस्ट के रूप में तीतुस को ऐसा करने के लिए कहा गया था।[40] जल्दबाजी में की गई नियुज़्तियां अज़्सर गड़बड़ी, परेशानी या पछतावे का कारण बनती हैं जो शायद एक दशक तक भी न चल पाती हों (देखिए मज़ी 7:20)।

यदि पवित्र शास्त्र के अनुसार कोई कदम उठाने की मांग की गई होगी, तो निश्चय ही यह उस समय हुआ जब पुरुषों को ''उनकी नाईं तुज़्हारे प्राणों के लिए जागते रहने के लिए नियुज़्त किया गया, जिन्हें लेखा देना पड़ेगा'' (इब्रानियों 13:17)।

4. उसे सावधान रहना चाहिए कि ''दूसरों के पापों में भागी न'' हो। पाप को सुधारने से भी कोई पाप में पड़ सकता है (गलातियों 6:1, 2)। दुख की बात होती है जब कोई विश्वासी ज़ाई दूसरे को सुधारने लगे परन्तु अंत में स्वयं ही उसे सुधारना पड़ जाए (देखिए रोमियों 2:21-24)। पौलुस ने संक्षेप में, एक ही आयत में ऐसे लोगों की पहचान बता दी जिनमें दूसरों को सिखाने या सुधारने की योग्यता है (ध्यान से रोमियों 15:14 पर विचार करें)।

5. वह एक आदर्श होना चाहिए: ''अपने आपको पवित्र बनाए रख।'' इन बातों में निष्कपटता और सच्चाई से न्याय करने की वास्तविक कुंजी है। (देखिए तीतुस 1:15, 16)।

चयन करने वाले वे ऐल्डर यदि पवित्रता से सचमुच इन पांच गुणों को ध्यान में रखें तो

कोई गलत निर्णय नहीं होगा और केवल योग्य भाइयों को ही नियुक्त किया जाएगा!

तीमुथियुस के स्वास्थ्य के लिए संचित परामर्श (आयत 23)

कोई भी सुसमाचार प्रचारक जो अपने कर्ज़व्य को पूरी ईमानदारी से निभाता है उसे दबाव, तनाव और स्वास्थ्य सज़्बन्धी कठिनाइयां अवश्य आएंगी। तीमुथियुस को पुत्र की तरह मानते हुए पौलुस ने उसे कुछ व्यावहारिक सुझाव दिए ताकि तीमुथियुस सेवा के भावी दिनों के लिए स्वस्थ रहे।

आयत 23 में पौलुस ने उससे आग्रह किया, ''अपने पेट के और अपने बार - बार बीमार होने के कारण थोड़ा - थोड़ा दाखरस [यू.: *oinos*] भी काम में लाया कर।'' जैसा कि रोमियों 14:21 या इफिसियों 5:18 में इसके उपयोग से स्पष्ट है, *oinos* (ओइनोस) निकाली हुई मय हो सकती है, या यह बिना निकाली हुई मय जैसा कि मरकुस 2:22 (यू.: *oinon neon* अर्थात नई मय) भी हो सकती है और यूहन्ना 2:3 में इसके इस्तेमाल से स्पष्ट है। 1 तीमुथियुस 3:8 और तीतुस 1:7 में भी इसी शज़्द का इस्तेमाल किया गया है जहां कुछ लोगों को मय के अत्यधिक सेवन या इसके गुलाम बनने के बारे में चेतावनी दी गई है। जिस भी मय या दाखरस की बात हो, पौलुस उसके *उचित उपयोग* पर चर्चा कर रहा था न कि *दुरुपयोग* पर।

आज कई देशों में बिना उबला हुआ पानी पीने का अर्थ पेचिश या अन्य बीमारियों को दावत देना है। मय में ये अशुद्धताएं नहीं रहती हैं। इस बात को मन में रखकर ध्यान दें कि पौलुस ज़्या कह रहा था और ज़्या *नहीं*।

इसमें एक सकारात्मक सबक है! किसी की शारीरिक दुर्बलताओं के लिए मय का *उचित उपयोग* एक ईश्वरीय सुझाव हो सकता है। पौलुस ने न केवल तीमुथियुस के पेट का उल्लेख किया बल्कि उसने यह भी आग्रह किया कि वह बार - बार बीमार होने के कारण थोड़ा दाखरस ले लिया करे। लूका 5:31 में मसीह का सहजबुद्धि की बात मिलती है: ''वैद्य भले चंगों के लिए नहीं, परन्तु बीमारों के लिए आवश्यक है।'' डॉज़्टरी सहायता लेने का इन्कार करने की अति मसीह की शिक्षा या तीमुथियुस के लिए पौलुस के नुस्ज़े के अनुकूल नहीं है। किसी समस्या से पीछा छुड़ाने की कोशिश करने से वह समस्या हल नहीं हो जाती। देर करना भी खतरनाक हो सकता है। याकूब 5:14 इस बात को साबित करता है, कि कोई चाहे इसे कैसे भी ले, परन्तु यदि कोई बीमार है, तो उसके इलाज के लिए कुछ किया जाना आवश्यक है। *कई धार्मिक गुट यह कहते हैं कि यदि आप डॉज़्टर के पास जाते हैं तो इसका अर्थ यह होगा है कि आप परमेश्वर में विश्वास नहीं रखते, लेकिन यह तो बाइबल की शिक्षा नहीं है*।

इसमें एक नकारात्मक सबक भी है। कुछ लोग इस आयत का अल्कोहल के विभिन्न रूपों के इस्तेमाल को उचित ठहराने के लिए *दुरुपयोग* करते हैं। आइए ईमानदारी से निज़्न प्रश्नों का उज़र दें:

1. ज़्या शराब पीने की ज़िद करने वाला व्यज़्ति इसलिए ज़िद करता है कि यह आयत पानी पीने से रोकती है? आयत को ध्यान से पढ़ें।

2. ज़्या इस आयत से शराब पीने को उचित ठहराने की कोशिश करने वाला ''थोड़ी सी

मय'' लेकर बस कर देता है ? यदि नहीं, तो ज़्या उसने पौलुस की वह बात मानी है जो उसने तीमुथियुस से कही थी ?

3. ज़्या इस आयत से पीने को सही ठहराने की कोशिश करने वाला *केवल मय ही पीता है* (विस्की, बीयर, या कोई अन्य नशीली चीज़ नहीं) ?

4. इस आयत में से पीने को उचित ठहराने की कोशिश करने वाला ज़्या ''*अपने पेट के*'' या ''*अपने बार बार बीमार होने के कारण थोड़ा - थोड़ा दाखरस*'' पीता है ?

हम ऐसे युग में रहते हैं जिसमें शरीर की निर्बलता को दूर करने के लिए बिना किसी बुरे प्रभाव या परेशानी के बहुत सी दवाइयां ली जा सकती हैं। मसीही व्यक्ति का जीवन ऐसा होना चाहिए कि उसके बारे में कोई बुरी बात न कही जाए (देखिए 2 कुरिन्थियों 8:20, 21; 1 कुरिन्थियों 10:28-33; 1 पतरस 3:15-17; रोमियों 14:16, 21)। इस प्रकार का जीवन बिताने की इच्छा करने वाला समझ जाएगा कि तेज़ पेय (वह मय हो या कुछ और) *बहुत हानिकारक* है !

पाप के परिणाम बुरे हैं और उनसे बचा नहीं जा सकता (पद 24, 25)

कोई पाप प्रकट है या वह बाद में पता चले, *हम इस तथ्य से नहीं बच सकते कि हमारे पाप सामने आ जाएंगे* (5:24; देखिए गिनती 32:23)। यह जानते हुए कि कुछ पाप ''बिल्कुल स्पष्ट हैं,'' हमें परख करके तथ्य इकट्ठे करने चाहिए और जल्दबाजी में निर्णय लेने या काम करने से बचना चाहिए (5:22)। परमेश्वर न करे कि हम सब कुछ देखने वाली उसकी नज़र में ''कामों को ढांपने'' की कोशिश करें (इब्रानियों 4:12, 13) और बाद में किसी समय पता चलने पर भाइचारे को चोट पहुंचाएं (5:25ख)। इस पूरे अध्याय में पाप के प्रभाव बिखरे पड़े हैं (5:6, 11-13, 20-22)। संक्षेप में, पौलुस की शिक्षा यह है कि जहां पाप है, वहां हमारी सोच यूसुफ की तरह चाहिए (उत्पत्ति 39:9) और भजन लिखने वाले की तरह प्रार्थना करनी चाहिए (भजन 19:12-14)।

पाठ 17: दासों और स्वामियों के लिए सम्मान (6:1, 2)

मसीहियत किसी भी संस्कृति में जाकर हर प्रकार के व्यक्तित्व को काम करने के योग्य और अच्छे सम्बन्ध में ला सकती है (गलतियों 3:26-28)। इसे सबसे बड़ी परीक्षा का सामना पहली शताब्दी में करना पड़ा था जब दासता की संस्कृति का प्रभाव था। इस क्षेत्र में भी पौलुस ने मसीही लोगों के मानने के लिए एक सराहनीय ढंग बताया।

प्रतिक्रिया

दास के लिए ''अपने स्वामी को बड़े आदर के योग्य'' जानना आवश्यक है (6:1)। यहां फिर ''आदर''[42] शब्द आया है (5:3, 17)। यहां पर आदर उसके लिए है ''जो दूसरों

से ऊंचे पद का है'' (इफिसियों 6:5-8 ध्यान दिलाता है कि वह आदर कैसे दिखाया जाना चाहिए और उसमें ज़्या करना चाहिए)। यहीं पर वह दूसरा कोस आता है (देखिए मत्ती 5:38-42), जहां प्रभु के उच्चतम नियम का समर्पण वर्तमान सामाजिक नियमों या कानूनों से ऊपर होता है। ऐसी सेवा बहुत ही उज़्म है। ईश्वरीय काम या मसीह जैसी सेवा करने के लिए जो कुछ भी करने की आवश्यकता है उसे करने के लिए आगे बढ़ जाने पर अधिकारी पर कभी संदेह न करें (रोमियों 12:20, 21)।

तर्क

पवित्र शास्त्र में बताई गई दूसरे कोस तक जाने की सेवा न्याय संगत है। हमें सेवा ऐसे करनी चाहिए ''जिससे परमेश्वर के नाम और हमारी शिक्षा की बदनामी न हो।''[43] बाइबल दिखाती है कि लोग तीन प्रकार से प्रतिक्रिया कर सकते हैं जिससे परमेश्वर के नाम की बदनामी न हो (देखिए भजन 74:18-23)।

हमें इस बात का अहसास होना चाहिए कि हम स्वयं ऐसा काम कर सकते हैं जिससे परमेश्वर के नाम और हमारी शिक्षा की बदनामी हो सकती है। तथ्य यह है कि परमेश्वर हमें अपने साथ वही काम करने की अनुमति देगा जिससे उसके नाम को आदर मिले (1 कुरिन्थियों 3:9; मत्ती 5:16; 1 तीमुथियुस 2:1-4; 4:12-15) और हम अपनी शिक्षा की शोभा बढ़ा सकें (तीतुस 2:10)।

प्रतिफल

यदि हम परमेश्वर की न्यायसंगत मांगों को व्यवहार में लाएं तो उनसे समाज में अद्‌भुत बदलाव आ सकता है। एक दास या सेवक को चाहिए कि एक विश्वासी स्वामी का अपमान[44] न करे। उन दोनों को मसीह में होने के लाभ[45] मिलते हैं जिसने अपने आप को उन दोनों के लिए दे दिया (2 कुरिन्थियों 5:14, 15; फिलेमोन 15-20)।

पौलुस की बात का व्यावहारिक महत्व और भी स्पष्ट हो जाता है जब हम बार्कले के इन शब्दों पर ध्यान देते हैं:

> रोमी साम्राज्य में लगभग 6,00,00,000 गुलाम थे। उनकी संख्या के कारण ही दासों को शक्तिशाली शत्रुओं की तरह माना जाता था। कोई दास यदि विद्रोह करता तो उसे बड़ी बेरहमी से मार डाला जाता था, क्योंकि रोमी साम्राज्य दासों को अपने विरुद्ध उठने नहीं दे सकता था। यदि कोई दास भाग जाता, तो पकड़े जाने पर उसे या तो मार डाला जाता या उसके माथे पर F अक्षर लिख दिया जाता, जिस अर्थ से *fugitivus* अर्थात *भगौड़ा है ...*। ई. के. सिंपसन ने ठीक ही लिखा है: ''मसीहियत का आत्मिक अभियान घृणा की सुलगती चिनगारियां भड़काकर भस्म करने वाली लपट, या भगौड़े दासों को अपनी गोद में आज्ञा देकर निवाशक समझौता बन जाना था।'' कलीसिया के लिए दासों को विद्रोह के लिए उकसाना अपने स्वामियों के विरुद्ध खड़े करना बड़ा विनाशकारी होता होगा। इससे तो

शीतयुद्ध, सामूहिक हत्या और कलीसिया के पूरी तरह से अपमान का कारण बना होगा।[46]

उसकी तुलना में जिसे विलियम बार्कले और ई. के. सिंपसन ने गड़बड़ी का कारण बताया, पौलुस ने एक बढ़िया उदाहरण दिया कि सामाजिक क्षेत्र में जहां बुराइयां होना सामान्य बात हैं पवित्र शास्त्र हमारी अगुआई कैसे करता है। ''समाज के नियमों की निंदा'' करने की कोशिश के बजाय, ईश्वरीय सिद्धांत लोगों को किसी भी प्रबन्ध में ढाल देते हैं ताकि, यदि वे इससे जुड़े रहें तो काम करने और जीने के लिए यह उनके सज़्बन्ध में काम कर सके। दोनों ईश्वरीय गुणों को दिखाते हों तो स्वामी – दास का सज़्बन्ध भी सहने के योग्य है और सार्थक है।[47] *ज़्या सब लोगों के उद्धारकर्ज़ा का दास होकर कोई उसकी जी हज़ूरी करता है।*

संक्षेप में

पौलुस ने 5:1–6:2 में उम्र, संगठनों, कर्ज़व्यों, सामाजिक तनावों और ढांचे और आत्मिक सेवाओं और पाप के बहकावों पर कितना अद्‌भुत संदेश दिया है! परमेश्वर की प्रेरणा से लिखने वाली पौलुस की कलम जीवन में आने वाली सभी मानवीय सज़्बन्धों के लिए मधुर, कोमल और ज़ाईचारे को बताने की चुनौती बड़े ही शानदार ढंग से दी गई है!

पाद टिप्पणियां

[1]इस भाग में 1 तीमुथियुस 6:1, 2 को शामिल करना रूपरेखा बनाने के लिए अधिक महत्वपूर्ण लगता है। अध्याय 5 के सज़्बन्धों से लगता है कि उसके विचारों में अध्याय 6 की ये दो आयतें शामिल की जाएं। [2]नौजवान लोग तेज़, आवेगपूर्ण, असहिष्णु होते हैं। कुछ बूढ़े लोगों के लिए इशारे की ज़रूरत हो सकती है, परन्तु यह डांटने या गाली गलोच करने के बजाय विनति करने से है। [3]डांट (यू.: *epiplesso*) – ''पर मरना, ... बातों से पीटना, ...'' (सी. जी. विल्के एण्ड विलिबर्ड ग्रिम, *ए ग्रीक –इंग्लिश लेज़िकन ऑफ़ द न्यू टैस्टामेंट,* अनु. व संशो. जोसेफ एच. थेयर [एडिनबर्ग, स्कॉटलैण्ड: टी. एण्ड टी. ज़्लार्क, 1901; रीप्रिंट संस्क., ग्रैंड रैपिड्स, मिशी.: बेकर बुक हाउस, 1977], 241)। [4]समझा (यू.: *parakaleo*) –''बिनती करना, विनय करना, प्रार्थना करना, सांत्वना देना, ढाढ़स बंधाना, उत्साहित करना, शिक्षा देना'' (थेयर, 482–83)। [5]''सिसेरो ने लिखा, 'फिर तो अपने बुज़ुर्गों के प्रति आदर दिखाना और उनके सबसे अच्छे और सबसे स्वीकृत के साथ अपने आप को जोड़ना नौजवान का कर्ज़व्य है ताकि उनके परामर्श तथा प्रभाव का लाभ उठा सके। ...' (सिसेरो, *De Officiis, 1:34 ...* एक प्रसिद्ध फ्रांसीसी कहावत है जो आह भरते हुए कही जाती है: 'काश जवानी के पास ज्ञान और बुढ़ापे के पास सामर्थ होती।' लेकिन जब दोनों एक दूसरे का आदर करते हैं ... तो दोनों के बड़े लाभ के लिए उम्र की बुद्धि और अनुभव, ... जवानी की शज़्ति और साहस के साथ सहयोग करती है'' (विलियम बार्कले, *द लैटर्स टू तिमोथी, टाइटस, एण्ड फिलेमोन,* द डेली स्टडी बाइबल सीरीज, संशो. संस्क. [फिलाडेल्फिया: वेस्टमिंस्टर प्रैस, 1960], 120)। (देखिए फिलिप्पियों 2:22)। [6]ज़ोरदार सिफारिश की जाती है कि हर मसीही भाई, विशेषकर हर प्रचारक, एक अनाम लेख ''द वार विदिन, ऐन अनाटमी ऑफ़ लस्ट,'' *लीडरशिप मैगज़ीन,* (फाल ज़्वाटर, 1982): 30–48 पढ़े। [7]विलियम हैंडरिज़्सन, *ए कमैन्ट्री ऑन 1 एण्ड 2 तिमोथी एण्ड टाइटस* (लंदन: द बैनर ऑफ़ ट्रुथ ट्रस्ट, 1964), 166.

[8]पवित्र (यू.: *hagnos*) – ''पवित्र ... शुद्ध (पापों से) होना, 1 तीमु. 5:22 ... निष्पाप। ...'' (वाल्टर बाउर, *ए ग्रीक इंग्लिश लैज़िसकन ऑफ़ द न्यू टैस्टामेंट एण्ड अदर अरली क्रिश्चियन लिटरेचर,* 2रा संस्क., संशो. विलियम एफ़. अर्ड्ट एण्ड एफ़. विल्बर गिंगरिक [शिकागो: यूनिवर्सिटी ऑफ शिकागो प्रेस, 1957], 11-12)। [9]देखिए उत्पत्ति 39:1-12; 2 कुरिन्थियों 8:20, 21; 1 कुरिन्थियों 10:31-33; मत्ती 5:27, 28; 1 थिस्सलुनीकियों 4:3-7; ध्यान दे पढ़ें नीतिवचन 7:6-27; 6:20-35; 9:13-18. [10]आदर (यू.: *time*) – ''महत्व देना, योग्य जानना, सम्मान ... दर्जा, प्रतिष्ठा ... समर्थन'' (एडवर्ड रोबिन्सन, ए ग्रीक इंग्लिश लैज़िसकन ऑफ़ द न्यू टैस्टामेंट [न्यू यॉर्क: हार्पर एण्ड ब्रदर्स, 1863], 721); ''उसके प्रति ... जो दूसरों से ऊंचे दर्जे का हो ... दिखाया गया'' आदर (थेयर, 624)।

[11]भक्ति (यू.: *eusebeo*) – ''माता पिता के सामने ... भय, प्रणाम ... आदर, सम्मान करना'' (रोबिन्सन, 307)। [12]हक देना (यू.: *apodidomi*) – ''देना, अपनी चीज़ [त्यागना] ...'' (थेयर, 61)। [13]बार्कले, 124. [14]देखिए निर्गमन 22:22; व्यवस्थाविवरण 10:17-19; 24:19-21; 26:12; 27:19; जकर्याह 7:9, 10; मलाकी 3:5; प्रेरितों 6:1-6; याकूब 1:27. [15]बार्कले, 125. [16]कोई नहीं (यू.: *monoo*) – ''अकेला या ऐकांतवासी ... बिना बच्चों के'' होना (थेयर, 418)। इस वाक्यांश में मुख्य बात का पता चलता है कि ''सचमुच विधवा'' कौन हो सकती है। पौलुस इस बात को जोड़ रहा था कि यदि कलीसिया परवाह नहीं करती तो परमेश्वर तो हमारी आवश्यकताओं का ध्यान रखता ही है। इसलिए विधवा को अपने आप को उस के भरोसे छोड़ देना चाहिए (1 पतरस 5:6, 7; मत्ती 6:25-34)। [17]बदचलनी का आनन्द (यू.: *spatalao*) – ''ऐशो आराम का जीवन, विलासिता ... विलासिता भरा जीवन'' (थेयर, 585)। [18]मेरविन आर. विनसेंट, *वर्ड स्टडीज़ इन द न्यू टैस्टामेंट,* अंक 4 (ग्रैंड रैपिड्स, मिशी.: विलि. बी. इर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1957), 260. [19][उसका नाम] लिखा जाए (यू.: *katalego*) – ''रजिस्टर पर चढ़ाना, दर्ज करना (विशेषकर सिपाही): उन विधवाओं का नाम जिनका कलीसिया में विशेष सम्मान था ... और कलीसिया के खर्चे पर विधवाओं और अनाथों की देखभाल करती थीं'' (थेयर, 333)। [20]विनसेंट, 261.

[21]आयत 10 में ''और ... रही हो'' पर ध्यान दें। यूनानी भाषा में यहां ''यदि'' का संकेत देते हुए *ei* जोड़ा गया है। ... मत्ती 4:3, 9 में ''यदि'' के तुलनात्मक उपयोग पर ध्यान दें जहां शैतान यीशु की परीक्षा में *ei* और *ean* (यदि) के दोनों शब्दों का इस्तेमाल करता है। आयत 3 में शैतान ने सांकेतिक शब्द *ei* का इस्तेमाल किया जो इस प्रकार कह रहा था, ''ज्योंकि तू परमेश्वर का पुत्र है, इसलिए आज्ञा दे ...'' (डब्ल्यू. एच. डेविस, *बिगिनर'स ग्रामर ऑफ़ द ग्रीक न्यू टैस्टामेंट,* [न्यू यॉर्क हार्पर एण्ड ब्रदर्स पब्लिशर्स, 1923], 68, 88)। इस विधवा ने ये बातें की हुई हैं इसलिए इसने शर्त को पूरा किया है। [22]मन लगाया (यू.: *epakoloutheo*) – ''लगे रहना, उसके आदर्श को मानना, हर भले काम में लगे रहना, समर्पित, 1 तीमुथि. 5:10.'' [23]सुख विलास (यू.: *katastreniao*) – ''शारीरिक इच्छा को महसूस करना। कामुक इच्छा जो उन्हें मसीह से दूर करती है।'' [24]विश्वास (यू.: *pistinis*) – ''किसी भी बात की सच्चाई को मानना, परमेश्वर और ईश्वरीय बातों के साथ मनुष्य के सम्बन्ध का आदर करने का विश्वास, आम तौर पर इसमें इसके साथ जुड़े हुए विश्वास से उत्पन्न भरोसे और पवित्र जोश को मिलाया जाता है।'' [25]छोड़ना (यू.: *atheteo*) – ''त्यागना, किसी चीज़ के लिए ऐसे काम करना जैसे यह मिट गई हो; इस प्रकार इसके विरुद्ध विचारों या कार्यों से बल के नियम से वंचित करना, ... नकारना, ठुकराना, उपेक्षा करना।'' [26]फिरना (यू.: *perierchomai*) – ''घर घर घूमना, घुमक्कड़।'' [27]बकबक (यू.: *phluaros, phloo* से लिया गया) – ''उबलना, बुलबुले ऊपर फैंकना, और ज्योंकि बुलबुले खोखले और खाली होते हैं, इसलिए व्यर्थ और मूर्खता बातों में लगना।'' [28]अनुचित बातें (यू.: *periergos*) – ''इधर - उधर की बातें करने वाले विशेषतया दूसरों के मामलों की बातों में व्यस्त रहने वाले महत्वपूर्ण विषयों की उपेक्षा कर देते हैं।'' [29]निन्दा (यू.: *loidoiria*) – ''गाली।'' विधवा को ''दूसरे को आलोचना के लिए विरोध का अवसर नहीं देना'' चाहिए। [30]प्रबन्ध (यू.: *proistemi*) – ''ठहराना, संचालन करना, सरपरस्त संरक्षक होना, सहायता देना, संभाल करना, ध्यान देना।''

[31]परिश्रम करना (यू.: *kopiao*) – ''थकना, चूर होना (परिश्रम या बोझ, या दुख से) परमेश्वर के राज्य

के प्रचार और बढ़ौतरी के लिए सिखाने वालों के कठिन प्रयास ... 1 तीमुथि. 5:17 ... 1 थिस्स. 5:12 ...1 तीमु. 4:10.'' [32]यूनानी शब्द *लोगो* का अनुवाद वचन कुलुस्सियों 3:17; 1 तीमुथियुस 4:12 और याकूब 3:2 वाला शब्द ही है। [33]आयत 3 में ''आदर'' शब्द का इस्तेमाल हुआ है परन्तु यहां पर योग्य ऐल्डर के लिए *दोगुना* लिखा गया है। [34]योग्य (यू.: *axios*) – ''एक जैसे भार, महत्व, मूल्य, ...जिससे भी तुलना की जा सके।'' [35]डॉन डिवेल्ट, *पॉल 'स लैटरस टू तिमोथी एण्ड टाइटस* (जोप्लिलन, मों.: कॉलेज प्रैस, 1961), 105. [36]एच. ई. डैना एण्ड जे. आर. मैंटे, *ए मैनुएल ग्रामर ऑफ़ द ग्रीक न्यू टैस्टामेंट* (न्यू यॉर्क: मैकमिलन कं., 1948), 230. [37]झिड़कना (यू.: *elegcho*) – ''डांटना, दोषी ठहराना, सामान्यतया पर दोषी ठहरने वाले व्यक्ति के अपमान के लिए, भण्डाफोड़ करना, ... मसीहियत के झूठे शिक्षकों के भण्डाफोड़ और खण्डन के इस्तेमाल के लिए, तीतुस 1:9, 13 ... नुक्स निकालना, सुधारना; ... हिसाब के लिए बुलाना, किसी को उसका कसूर बताना, व्याख्या मांगना।'' [38]पक्षपात (यू.: *prokrima*) – ''तथ्यों के पता चलने से पहले ही मन बना लेना, पहले ही न्याय कर देना, पूर्वाग्रह।'' [39]प्रेरितों 14:23 में ''ठहराए'' शब्द (यूनानी शब्द *cheirontoneo* से लिया गया) का अर्थ ठहराना या हाथ रखकर नियुक्त करना है। [40]डेटन कीसी (अबिलेन, टैक्सस: क्वालिटी पब्लिकेशनस, 1967, 57–63) की पुस्तक *ए री इवैलुएशन ऑफ द एल्डरशिप* में ''हाथ रखने'' और ठहराने पर विस्तार से बताया गया है।

[41]रख (यू.: terei, tereo के कर्तृवाचक, वर्तमान, आज्ञा बोधक है) – ''निगरानी रखना, पूरा करना, ध्यान देना, रक्षा करना, जो मेरे कार्यों को मन से लेता है।'' [42]आदर (यू.: *time*) – थेयर की परिभाषा का जो भाग विशेष तौर पर यहां लागू होता है, ''दूसरों से ऊंचे स्तर का होने का आदर ... 1 तीमु. 1:17; 6:16 ... जो आदर किसी को उसके पद या स्थिति के कारण मिलता है: इब्रा. 5:4.'' [43]बदनामी (यू.: *blasphemeo*) – ''बुराई करना, झूठी निन्दा करना, अपशब्द बोलना।'' देखिए 2 तीमुथियुस 2:20, 21; यहेजकेल 20:24–27; तीतुस 2:5; 2 शमूएल 11:4, 5, 14–17; 12:13, 14. [44]अपमान (यू.: *kataphroneo*) – ''किसी को भी घटिया समझना, तुच्छ जानना, नज़रअन्दाज करना, परवाह न करना ... 1 तीमु. 6:2.'' [45]लाभ (यू.: *euergesia*) – ''अच्छा आचरण, एक दूसरे को लाभ।'' [46]बार्कले, 141.